विषयानुक्रमणिका

पृ० सं०

१. **प्रथम अध्याय : पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी-उर्दू उपन्यासों की पूर्व पीठिका** १

- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यासों की पूर्व पीठिका : संस्कृत कथाएँ प्राकृत पालि तथा अपभ्रंश कथाएँ, मध्ययुगीन कथा - साहित्य, उपन्यास पूर्व खड़ी बोली का कथा - साहित्य
- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन उर्दू उपन्यासों की पूर्व पीठिका : अरबी - फारसी की दास्तानें तथा उनका प्रभाव, संस्कृत की कथाओं का प्रभाव
- फोर्ट विलियम कालेज की भूमिका : हिन्दी तथा उर्दू कथा - साहित्य के संदर्भ में।
- बंगला कथा - साहित्य का प्रभाव।
- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी - उर्दू उपन्यास और उनके प्रति बुद्धिजीवियों की प्रतिक्रिया।
- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यास : सामान्य पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ।
- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन उर्दू उपन्यास : सामान्य पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ।

२. **द्वितीय अध्याय : पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी-उर्दू के सामाजिक उपन्यास** २६

- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी के सामाजिक उपन्यास : सामाजिक जीवन की विवेच्य युगीन रेखाएँ, कालक्रमानुसार हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों का सामान्य विवेचन।
- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन उर्दू के सामाजिक उपन्यास : सामाजिक जीवन की विवेच्य युगीन रेखाएँ, कालक्रमानुसार उर्दू के सामाजिक उपन्यासों का सामान्य विवेचन।

३. **तृतीय अध्याय : पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी-उर्दू के ऐतिहासिक उपन्यासों का सामान्य विवेचन** ७८

- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास-ऐतिहासिक उपन्यासों के सृजन के मूल कारण, ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रेरणा स्रोत इतिहास को बरतने की प्रवृत्ति कालक्रमानुसार हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों का सामान्य विवेचन।
- पूर्व प्रेमचन्दयुगीन उर्दू के ऐतिहासिक उपन्यास - ऐतिहासिक उपन्यासों के सृजन के मूल कारण, ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रेरणा स्रोत, इतिहास को बरतने की प्रवृत्ति, कालक्रमानुसार उर्दू के ऐतिहासिक उपन्यासों का विवेचन।

पृ० सं०

४. **चतुर्थ अध्याय : पूर्व प्रेमचन्दयुगीन उर्दू हिन्दी उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन-विषय एवं उद्देश्य** १०१

- विवेच्य युगीन सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिस्थितियाँ, रूढ़ियाँ तथा उनका प्रभाव।
- तद्युगीन नारी -समाज की ज्वलंत समस्याओं का चित्रण एवं समाधान।
- प्रेम का विभिन्न और विशद रूप।
- पुरुष वर्ग की तद्युगीन ज्वलंत समस्याएँ।
- धर्म के प्रति बदलता हुआ दृष्टिकोण।
- देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने का प्रयत्न।
- पारिवारिक विघटन की समस्या।
- साम्प्रदायिक एकता की समस्या।
- तद्युगीन समाज एवं स्त्रियों में व्याप्त अन्य रूढ़ियाँ एवं अन्धविश्वास।
- पूर्व प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उर्दू के ऐतिहासिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।

५. **पंचम अध्याय : पूर्व प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उर्दू उपन्यासों का शिल्प : तुलनात्मक विवेचन** १२५

- शिल्प का स्वरूप।
- उपन्यास तत्वों के आधार पर उर्दू - हिन्दी उपन्यासों की तुलनात्मक विवेचना : कथा संगठन, चरित्र-चित्रण, वातावरण-चित्रण, भाषा - संरचना, शैली - शिल्प।

६. **उपसंहार** १४३

परिशिष्ट 'क' : उपजीव्य ग्रन्थ १४६

१. हिन्दी के उपजीव्य ग्रन्थ
२. उर्दू के उपजीव्य ग्रन्थ

परिशिष्ट 'ख' : उपस्कारक ग्रन्थ १५४

१. हिन्दी के उपस्कारक ग्रन्थ
२. उर्दू के उपस्कारक ग्रन्थ

परिशिष्ट 'ग' : पत्र पत्रिकाएँ १५६

१. हिन्दी पत्रिकाएँ
२. उर्दू पत्रिकाएँ